# उहल

## हिन्दी पत्रिका

## वर्ष–2022

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी

राजभाषा प्रकोष्ठ

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | लेखक | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | सुश्री अंजली | बचपन का बस्ता (कविता) | 2 |
| 2 | श्री अजय कुमार | बन जाऊँ (कविता) | 3 |
| 3 | श्री अनुराग पांडेय | दो चार आने वाला बचपन (कविता) | 4 |
| 4 | श्री अपूर्व दशोरा "आफताब" | वो जो मेरा है (गज़ल),<br>नींद नहीं है आँखों में,<br>नज़्म-दशोरा,<br>जस्टिस फोर (कवितायें) | 5 - 7 |
| 5 | श्री अपूर्व सिंह देयो | मेरे सपनों की रानी (कविता) | 8 |
| 6 | श्रीमती देबाश्रिता राय चौधरी | जलाओ इन्सानियत का दिया<br>उन्मुक्त गगन के पंछी (कवितायें) | 9 - 10 |
| 7 | डॉ. दीपक स्वामी "उजाला" | मधुशाला, धर्माभिषेक (कवितायें) | 11 - 12 |
| 8 | श्री डालचंद्र | परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है (कविता) | 13 - 14 |
| 9 | श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे | नफरत (कविता)<br>वैश्विक महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभाव (निबन्ध) | 15 - 17 |
| 10 | श्रीमती माला ठाकुर | एक माँ की प्रतीक्षा (कविता) | 18 – 19 |
| 11 | श्रीमती मीना कुमारी | नशा (कविता) | 20 |
| 12 | श्री नितिन त्रिपाठी | मनहूस मौत की परछाई (कविता) | 21 – 22 |
| 13 | प्रो. रवीन्द्र अरोड़ा | बिजली महादेव (लेख) | 23– 25 |
| 14 | श्री रोहित भामु | घूँघट, नारी (कवितायें) | 26 – 27 |
| 15 | सुश्री सुरूचि | वैश्विक महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभाव (निबन्ध) | 28 – 30 |
| 16 | डॉ. स्वाति शर्मा | भाषा और लिपि (निबन्ध) | 31 – 32 |
| 17 | श्री तुलसीराम | दहेज प्रथा और बेटी (कविता) | 33 – 34 |
| 18 | श्री वैभव त्रिपाठी | चाय का नुक्कड़ (कविता) | 35 – 36 |
| 19 | श्री विजय सिंह | वैश्विक महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभाव (निबन्ध) | 37 – 38 |
| 20 | श्री विवेक तिवारी | हिन्दी पखवाड़ा-२०२० (प्रतिवेदन) | 39 - 42 |

**सुश्री अंजली जांगिड़** – लेखिका भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में आई.पी.एचडी. भौतिक विज्ञान की छात्रा हैं। कई वर्षों से कविता लेखन कर रही हैं। वर्तमान में भा.प्रौ.सं. मण्डी के लेखन क्लब की सदस्या हैं।

## बचपन का बस्ता

जवानी के इन कंधों पर मैं बचपन की यादों का बस्ता लिए फिरती हूँ
न भाये समझदारी की दुनिया मुझे, मैं आज भी बचपन की गलियों में फिरती हूँ।
मतलब की इस दोस्ती से, मेरी बचपन की दोस्त ही प्यारी थी
एक कट्टी और बट्टी में जहाँ, मेरी बसती दुनिया सारी थी
उस मासूम दोस्ती की तलब, मैं आज भी बचपन का बस्ता लिए फिरती हूँ।
सूरज के थकने पर, जब रात दहलीज पर आती थी
तारों की उस दुनिया में, निगाहें न जाने क्या तलाशती थी
मैं आज भी अक्सर रातों को, तारों में कुछ तो ढूंढे फिरती हूँ।
जवानी के इन कंधों पर, मैं आज भी बचपन का बस्ता लिए फिरती हूँ।
हर रात जब माँ मेरी, मुझे नई कहानियां सुनाती थी
कहानियों की उस दुनिया में, मैं रोज कहीं घूम आती थी
मैं आज भी अक्सर किताबों में, एक नई दुनिया ढूंढती फिरती हूँ।
जवानी के इन कंधों पर, मैं बचपन का बस्ता लिए फिरती हूँ।
मैं आज भी अक्सर बारिश में, कागज़ की कश्ती लिए फिरती हूँ।
जवानी के इन कंधों पर, मैं बचपन का बस्ता लिए फिरती हूँ।

**श्री अजय कुमार** – अजय कुमार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश के अभियांत्रिकी स्कूल में पी.एचडी. (डी१६०३३) के छात्र हैं। इनकी "बन जाऊँ" नामक कविता स्वरचित और अप्रकाशित है।

## बन जाऊँ

मैं किसी समंदर की सीप बन जाऊँ
रोते हुए चेहरे की मुस्कान बन जाऊँ
बिना पर के पंछी की उड़ान बन जाऊँ
बसंत ऋतु में पौधे का पहला फूल बन जाऊँ
जो हवाओं में अनंत तक ठहरे वो महक बन जाऊँ।
निराश हुई आँखों की चमक बन जाऊँ
जब बरसे बादल तो मिट्टी की खुशबू बन जाऊँ
जिसके टूटे न इरादे वो पहचान बन जाऊँ
किसी दोस्त का हमदर्द बन जाऊँ।
किसी की उम्मीद, आशा या विश्वास बन जाऊँ
पेड़ पर बैठा पंछी या टूटी डाल बन जाऊँ
बहती हवा या फिसलता रेत बन जाऊँ
रेगिस्तान का रेत या खेतों की हरियाली बन जाऊँ।
कोई अडिग पहाड़ या सफलता की सीढ़ी बन जाऊँ
काली अंधेरी रात या सूरज की स्वर्णिम किरण बन जाऊँ
भूखे की रोटी या प्यासे का पानी बन जाऊँ
गरीब की लाचारी या किसी बूढ़े की मजबूत लाठी बन जाऊँ।
चहकती चिड़िया या बहता पानी बन जाऊँ
शांत व्यक्तित्व या अथक, अडिग और प्रयासरत स्वभाव बन जाऊँ
घर की चारदिवारी या बिना किनारे का समंदर बन जाऊँ
या भगवान ने जो बनाया कि पहले अच्छा इन्सान तो बन जाऊँ।

**अनुराग पांडेय** – लेखक पन्द्रह सालों से तकनीकी के क्षेत्र में कार्यरत हैं। हिन्दी भाषा से इनका विशेष लगाव है। इनके लेख भारतवर्ष तथा विदेश में भी प्रकाशित हुए हैं। यह भौतिकवादी बदलावों और सांस्कृतिक मूल्यों के शीर्षकों के अन्तर्गत लिखने के लिए प्रयासरत रहते हैं। इनकी "दो चार आने वाला बचपन" नामक कविता स्वरचित और अप्रकाशित है।

## दो चार आने वाला बचपन

रबर का पहिया लकड़ी की चाबुक से सरपट गया
नंगे पैर दौड़ने वाला बचपन उसके पीछे भाग के कट गया |
चार आने का सौदा यूँ ही हथेली पर बंट गया
रंगीन जीभ वाला बचपन उसके चटकारों में कट गया |
साढ़े तीन की तरकारी को चार में लाने झट गया
कुलफी वाला बचपन उन आठ आनों के जश्न में कट गया |
जेठ की दोपहर में बेबाक ही धूप से लिपट गया
टोली वाला बचपन तो लू से लोहा लेते हुए कट गया |
दो रुपये की गेंद से कई शामों का खेल निपट गया
गली वाला बचपन तो तड़ी, गिट्टी फोड़ खेलके कट गया |
गद्दी पर बैठने की आशा में हर कहीं से लटक गया
ऊँची साइकल वाला बचपन तो कैंची चलाके कट गया |
काग़ज़ की फुकनी से साबुन का बुलबुला बनकर फट गया
उड़ने वाला बचपन उसमें सात रंग तलाशते हुए कट गया |
पापा की डाँट पर अक्सर माँ के पीछे सिमट गया
शरारत वाला बचपन उनसे आँख मिचोली खेलते कट गया |
कुछ अबोध सवालों के जवाबों में, मैं आज भटक गया
वो दो चार आने वाला बचपन भी कई यादें देकर कट गया |

**अपूर्व दशोरा "आफताब"**– लेखक उदयपुर, राजस्थान के निवासी हैं। आजकल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश में एमएससी, भौतिक विज्ञान के छात्र हैं। इनकी रूचि संगीत, साहित्य में है। इनकी निम्नलिखित रचनाएं स्वरचित और अप्रकाशित हैं।

## गज़ल

### वो जो मेरा है

वो जो मेरा है या मेरा होने का बहाना है,
खेर जो भी है सब एक अफसाना है
उन निगाहों की उम्मीद से बयां हो गया है उसका हाल,
इतनी देर मैं भी रूका वहाँ, क्या उसने मेरा हाल जाना है।
हँसी भी आती है अब तो उस रोने पर
रहा एक लम्हा वहाँ जो बरसों से मेरा ठिकाना है
बार-बार क्यों मुझे जाना है वहाँ, जहाँ से बार-बार मुझे आना है
गंदा भी करना है खुद को वहीं जहाँ बार-बार मुझे नहाना है
बहुत पेचीदा है उसकी महफिल का समा भी "आफताब"
देखना है उसे मुझे ही तगाफुल से, और बार-बार उसे मुझे ही बुलाना है।

### नींद नहीं है आँखों में...

नींद नहीं है आँखों में,
ख्वाब एक बहाना है
मेरी नादान मोहब्बत का
इतना सा फसाना है।

पास नहीं जो है मेरे,
पास भी उसको पाना है
हाँ! शर्त नहीं है ये इश्क की
पर दिल को भी तो मनाना है।

खुद से ही रहता दूर-दूर

पागलों का कैसा जमाना है,
पाया जिसे जा नहीं सकता
उसको सबको पाना है।

दोस्त भी हुए अजीब,
कैसा इनका याराना है,
याद नहीं करता कोई
पर याद सबको आना है।

## नज़्म–दशोरा

अपने साए को देख के यूँ चौंक जाते हैं,
अंधेरे में अब भी तेरे चेहरे नज़र आते हैं,
ज़िन्दगी की बारिश में हैं, चलते हैं डरते–डरते,
फिर क्यों इश्क की गीली जमीन पर फिसल जाते हैं।

यूँ तो तू कोई आग भी नहीं
फिर भी जलना चाहते हैं तेरी कशिश में,
यूँ प्यास इश्क की तेरी रूह से बुझाना चाहते हैं
यूँ तो तू इतनी खूब नहीं होगी जो कल की सुबह
फिर तेरी यादों के चिरागों में शब–ए–गम भूल जाते हैं।

पूछना मत इन चिरागों ने अंधेरा कायम कैसे रखा
ये चिराग तेरी यादों के अंधेरे फैलाते हैं,
ये लाज़िम है कि इन निगाहों को धोखा हुआ हो
तेरे हुस्न पर, तेरे दिल–ए–ऐतबार पर
अपने साए पर, इश्क की अपनी हार पर,

पर इन सन्नाटों की खुशबू में,
हम बहकते जाते हैं
कि हम अंधेरों में कुछ इस तरह चौंक जाते हैं।

## जस्टिस फोर...

चलिए आज हैशटैग-हैशटैग खेलते हैं,
कुछ कमाई सोशल मीडिया की भी करते हैं,
सुनाई देगा कुछ दिन जोश मीडिया
के गलियारों में, स्टेट्स, स्टोरीज और पोस्ट में,
और कुछ दिन न्यूज़ चैनल के एंकर्स की आवाज़ों में रोब,
और होंगे सवाल कुछ दिन सत्ता के नुमाइंदों से,
और फिर हम में से कोई ढूंढ लेंगे समीकरण धर्म, जाति, पार्टियों के लिहाज से,
और फिर कुछ दिनों बाद वही खामोशियां बेरूखापन,
और फिर वही मासूमों का रोना हंसेगा हम पर,
और किसी रोज अखबार में नया बलात्कार का किस्सा, नया तरीका,
नयी जगह, नया नाम और नया धर्म मासूम का
तो मिल जाएगा नया तरीका बवाल मचाने का
और सोशल मीडिया पर नयी ट्रेंडिंग...
## जस्टिस फोर...

**अपूर्व सिंह देयो**– लेखक पालमपुर, हिमाचल प्रदेश के निवासी हैं। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ी मल महाविद्यालय से स्नातक की है। वहाँ पर भौतिकी विभाग के सम्पादकीय मण्डल के सदस्य रह चुके हैं। वर्तमान में भा.प्रौ.सं. मण्डी में परास्नातक की पढ़ाई कर रहे हैं। इनकी "मेरी सपनों की रानी" नामक कविता स्वरचित और अप्रकाशित है।

## मेरे सपनों की रानी

मेरे सपनों की रानी कैसी होनी चाहिए?
यूँ तो हर कोई इसमें अठखलें लगाता है,
पर मैं जो कहता हूँ वह कोई न समझ पाता है।
यूँ तो सुन्दर और संस्कारी होनी चाहिए,
नहीं भी होगी पर सलीके से रहने वाली होनी चाहिए।
यूँ तो मीठा बोलने वाली होनी चाहिए
नहीं भी होगी पर प्यार से नाम बुलाने वाली होनी चाहिए।
यूँ तो चूल्हा चौखट जानने वाली होनी चाहिए,
नहीं भी होगी पर साथ बैठ खाना खाने वाली होनी चाहिए।
यूँ तो मेरे नाम के व्रत रखने वाली होनी चाहिए,
नहीं भी रखेगी पर सच्चा प्यार करने वाली होनी चाहिए।
इन्हीं उम्मीदों में ही कहीं छुपी है, मेरे सपनों की रानी।

**देबाश्रिता राय चौधरी** – लेखिका भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में वेब कांटेंट डेवेलपर (वेब साम्रगी विकासक) के तौर पर कार्यरत हैं। इनकी मातृभाषा बंगला है। इनका शौक कविता करना है और कक्षा नौ से हिन्दी में कविताएं लिख रही हैं। "जलाओ इन्सानियत का दिया" और "उन्मुक्त गगन के पंछी" इनकी अप्रकाशित रचनाएं हैं।

## जलाओ इन्सानियत का दिया

है यह पृथ्वी भय आतंक डर से भरी,
है यह सारा विश्व घृणा से उजड़ा।
दुहाई है ऐसे इन्सान की इन्सानियत पर
जो फैला रहा है आतंक सारे संसार भर।
उठो, हे सारे नौजवान!
सभी को है तुम्हारी प्रतीक्षा।
हे धरती माता अपने चरणों में,
दो हमको दीक्षा।
निर्दोष जान के आँसू से,
भीग गया है सारा देश।
पर क्या हुआ इस दुनिया में,
जहाँ रह गया आतंक शेष।
जंग के मैदानों में,
बरस रही है खून की होली।
चारों ओर गोले बारूद की वर्षा से,
फिकी पड़ गयी है सूरज की लाली।
मिटने के लिए इस आतंक को,
हमें आगे है बढ़ना।
देश की रक्षा के लिए,
हमें है शत्रुओं से लड़ना।
हर किसी के मन में,
इन्सानियत का दिया है जलाना।
आओ हम साथ चलें,
न कभी इस दिए को बुझाना।

## उन्मुक्त गगन के पंछी

अगर मैं पंछी होती
गगन पर उड़ती रहती
न होती कोई रोक-टोक
स्वतंत्र होकर घूमती मैं रोज
पेड़ों की डाली पर बैठकर
सुरीली स्वर में गाती
कभी विपदा आ जाए तो
झट से उड़ जाती
नीले आसमान के
एक छोर से दूसरे छोर तक
विचरण करती रहती
पंख पसारे उड़ते-उड़ते
कहीं जाके आती
पिंजरे में न कैद रहती
उन्मुक्त होकर विचरण करती
तिनका-तिनका जोड़कर
अपना घोंसला बनाती
सूरज के ढलते हर शाम
अपने नीड़ पर आ जाती।

**डॉ. दीपक स्वामी "उजाला"** – डॉ. दीपक स्वामी "उजाला" अभियांत्रिकी विभाग में सहायक प्राध्यापक के पद पर साल २०१५ से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश में कार्यरत हैं। यह राजस्थान की शिक्षा नगरी कहे जाने वाले शहर कोटा के स्थायी निवासी हैं। प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी माध्यम में करने की वजह से उनकी लेखनी हिन्दी भाषा की काव्य रचना में आतुर रहती है। इन्होंने विभिन्न मंचों पर हिन्दी कविता पाठ किया है। इनमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर मुख्य हैं।

## मधुशाला

मदमस्त वक्त की मोहिनी
लिए त्रिशाला है,
चहुं ओर होता तुझ पर हावी
ये तम का पाला है,
तू लिए ज्वालाग्नि भीतर
मल्ल कर,
कर चीर कर फेंक दे
ये तितर-बितर,
तू पर्याय है
उस सूरज का,
तू घनघोर कालिख में
फैला उजाला है,
ये जीवन की मस्तियां हैं
जैसे मधुशाला है,
आ होश में रख गाढ़ जैसे
अंगद सा हो पग,
क्षण भर की भंगुरता है
न आनंद की हो ललक,
तू हृदय की कुलाचों से
भीषण जमकर युद्ध कर,
है जीवन घर्षण
खोल बंधन तू कर समर,
तू ऋणी है उस सांस का

जिसने विश्वास खंगाला है,
अग्नि की तपिश है तू,
याद रहे “दीपक” है तू,
तू जले तो तम की मृत्यु है
सत्य का उजाला है,
ये जीवन की मस्तियां हैं
जैसे मधुशाला है।

## धर्माभिषेक

मंद-मंद ही बह रही, श्वास है जमीं तो क्या
कंटकों की शाल है राह पर बिछे तो क्या,
विकट वेदना की है काल सी हँसी तो क्या,
रक्त न बहे अब नसों में हो रिक्त यूँ,
पार्थ बाण खींच तू, पार्थ बाण खींच तू,
अनुनय की बेड़ियाँ, प्रसाद की मंशा नहीं,
है फिर स्वतंत्र तू, तनिक भी शंका नहीं,
गर्जना हो सिंह सी, कुकुर वन्दना नहीं,
प्रचण्ड क्रोध भरभरा मुट्ठियों को भींच तू
पार्थ बाण खींच तू, पार्थ बाण खींच तू,
उदय हो सूर्य जब मिटेगा तमस तभी,
छटे धुंध अधर्म की धर्म दिखेगा तभी,
मूढ़ता का नाश हो भ्रम जायेगा तभी,
देख न ऊँच-नीच तू,
पार्थ बाण खींच तू, पार्थ बाण खींच तू,
वीरता को राग का ग्रहण कहीं लगे नहीं,
दया दान और अब अधर्मी को मिले नहीं,
पुर जोर दुंदुभि बजा, कर वही जो हो सही,
नया बसंत अभिषेक कर
सनातन सत सींच तू,
पार्थ बाण खींच तू, पार्थ बाण खींच तू।

**श्री डालचंद्र** – इन्होंने मध्यप्रदेश के मेंदवारा गाँव से हिन्दी माध्यम से प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की। आगे की शिक्षा भी हिन्दी माध्यम में जारी रखते हुए माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक की परीक्षा पूर्ण की। इसी दौरान कई निबन्ध लेखन और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में अपने ज़िले टीकमगढ़ का नेतृत्व किया तथा कई पुरस्कार भी जीते। मध्यप्रदेश के उच्च तथा प्रसिद्ध अभियांत्रिकी संस्थान में दाखिला हुआ और वहीं से आण्विक यांत्रिकी तथा सूक्ष्म आण्विक अभियांत्रिकी से स्नातक तथा मास्टर की उपाधि प्राप्त की। इसी दौरान देश के कई उच्च संस्थान तथा विदेश के उच्च पचास संस्थानों में से एक ब्रिस्टॉल विश्वविद्यालय से शोध के लिए प्रस्ताव प्राप्त हुए। अभी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश के एस.सी.ई.ई. विभाग की जैव चिकित्सकीय यांत्रिकी तथा अभियांत्रिक प्रयोगशाला में शोध कर्त्ता हैं।

## परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है

चलो, प्रकृति का तो नियम है परिवर्तन
कभी तुम, कभी हम, ऐ समय का चक्र तो चलना ही चाहिए
बताओ मित्रों चलना चाहिए, कि नहीं चलना चाहिए

चलो, कोरोना को ही ले लो
अभी तो इसी का चक्र है, किन्तु ऐ भी रूक जाएगा ऐ हमें भरोसा होना चाहिए
बताओ भाई, घबराना चाहिए, कि ज्यादा सूझ-बूझ चाहिए कि नहीं चाहिए

चलो, भाई-भतीजेवाद पर
बहुत हो गया क्रिकेट, सिनेमा, शिक्षण संस्थान भी, इस पर भी कुछ कहना चाहिए
बताओ आप, इसका चक्र भी बदलना चाहिए, कि नहीं बदलना चाहिए

चलो, दिल्ली
देश की राजधानी, महिलाओं की रेप की कहानी, ऐ नहीं चाहिए
बताओ लोगों को इस पर, आवाज़ उठानी चाहिए, कि नहीं उठानी चाहिए

चलो, संसद की ओर
अब सरकार, पुलिस जिसकी लाठी उसकी भैंस की तर्ज पर नहीं चाहिए
बताओ तुम, यह तो संविधान से चलनी चाहिए, कि नहीं चलनी चाहिए

चलो भैया आप ही बता दो
हर व्यक्ति के जमा खाते में पन्द्रह-पन्द्रह लाख आने चाहिए
बताओ, नहीं-नहीं बताओ, अच्छे दिन आने चाहिए, कि नहीं आने चाहिए

चलो, शिक्षा नीति की ओर

यहाँ तो सूरत ही बदल दी जो बदलनी चाहिए

बताओ आप, अच्छी तस्वीर बन रही है तो बननी चाहिए, कि नहीं बननी चाहिए

चलो, हे राम

रघुकुल रीति सदा चली आई, अब इस समय तो यह कहीं नहीं है यही तो प्रकृति को चाहिए,

बताओ समय, तुम तो प्रकृति के मित्र हो, परिवर्तन ही प्रकृति का नियम होना चाहिए, नहीं होना चाहिए।

**श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे** – लेखक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी में कनिष्ठ अधीक्षक के पद पर तैनात हैं। इन्हें “नफरत” नामक कविता पर तीसरा पुरस्कार मिला।

## नफरत

इस धरोहर की महक से-
मुझे सरोकार तो है- किन्तु
मनसूबों की सरकारों से
नफरत सी हो गयी है।

इस धरती के संस्कारों से-
मुझे परिचय तो है-किन्तु
शिक्षा के ठेकेदारों से
नफरत सी हो गयी है।

इस माँ के आँचल से
मुझे दुलार तो है-किन्तु
आँचल में लगे कांटों से
नफरत सी हो गयी है।

# वैश्विक महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

छूटता जा रहा है किनारा,
टूटता जा रहा है सितारा।
बहुत ही उल्टी हवा बह चली,
लूटता जा रहा है सहारा।

**– मूनि मोहनलाल 'शार्दूल'**

जीवन को हम यदि मूलगामी रूप में देखने का प्रयास करें तो उपरोक्त पंक्तियों में जैन मूनि श्री जी ने हमारे जीवन के एक दौर को बहुत ही सरल शब्दों में स्थापित करने का प्रयास किया है। धरती पर मानवी जीवन के अस्तित्व को मानो तो वरदान है, किन्तु आज के दौर में इसने एक अभिशाप के रूप में सामने आकर अपना एक विनाशकारी रूप मानवी समाज को दिखाया है। जी हाँ, उस हर पल और हर घड़ी को समाज ने एक विनाश के रूप में जिया है, जब भी कभी विश्व में किसी महामारी ने विश्व को अपने चपेट में लिया है। आज यदि मैं अपने, अर्थात् मानवी जीवन को अतीत में झांककर देखता हूँ तो पता चलता है कि मानवी समाज ने हर वैश्विक महामारी का डटकर मुकाबला किया है। किसी भी महामारी के कारणों पर यदि संशोधन किया जाये तो पता चलता है कि कई बार इसे प्रकृति के प्रकोप के रूप में देखा गया है। वैश्विक महामारी को एक विनाशकारी संकट कहा जाता है, जो कई बार नहीं, किन्तु हर बार मानव जीवन में हाहाकार मचाता आया है।

यदि हम सामाजिक इतिहास व वैश्विक महामारी को देखें तो पता चलता है कि यह एक भयावह संकट है जो सम्पूर्ण समाज व्यवस्था को तहस-नहस कर रख देता है। इसी वैश्विक महामारी को दिखाया जाये तो प्लेग जैसी बीमारी ने कई दशकों में मानवी जीवन को अपने चपेट में लिया था। स्मॉल पॉक्स, वायरल फिवर तथा कॉलरा जैसे कई संकटों को यहाँ बताया जा सकता है। इसी क्रम में वर्ष २०२० ने पूरी दुनिया को एक वैश्विक संकट से अवगत कराया जिसका नाम है- कोविड-१९। कोविड-१९ को विस्तृत स्वरूप में कोरोना वायरस डिसेज-२०१९ कहा जाता है, जिसके आगमन का अनुमान कई एजेंसियों ने चीन की एक प्रयोगशाला में विषाणु के उत्सर्जन से लगाया है। किन्तु, इस तथ्य को अन्य शासकीय स्थलों पर पुख्ता होना अभी बाकी है। हम कुछ राजकीय हितों को अनदेखा कर इस महामारी को एक भयावह वैश्विक महामारी कह सकते हैं। क्योंकि कोविड-१९ ने सबसे ज्यादा विकसित राष्ट्रों के जनजीवन को प्रभावित किया है, जिसमें अमेरिका, जर्मनी, स्पेन, फ्रांस तथा एशिया आदि कई राष्ट्रों की सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था को बहुत बड़ा झटका लगा है।

भारत में इस वैश्विक महामारी का बहुत ही बुरा असर देखने को मिला, जिसमें अत्यंत निम्न वर्ग से लेकर राष्ट्रव्यापी व्यवस्था को निचोड़कर रख दिया है। कई बड़े शहरों को खाली कर दिया गया है, मजदूरों को काम नहीं है तथा उद्योगों को बंद करने तक का समय इस महामारी ने दिखाया है। वैश्विक महामारी कोई भी हो, उससे उभरने के लिए व्यवस्था को कई सालों तक अपना उभरने का प्रयास करना पड़ता है तथा कई संसाधनों को फिर जोड़ना आरम्भ करना पड़ता है। एक अच्छी व्यवस्था को अत्यंत बुरा स्वरूप मिलना किसी भी महामारी का प्रथम कारण माना जाता है। क्योंकि व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जनमानस पर यह संकट का एक अलग रौद्र रूप दिखाता है, जिसमें सबसे बड़ा नुकसान उस वर्ग का होता है, जहाँ जीवित हानि का सामना करना पड़ता है। इसी

क्रम में मानव हानि एक अत्यंत कठोर क्षण समाज तथा परिवार को देता है, जिसमें इन्सान के पास संघर्ष मात्र रह जाता है। बाकी की सारी व्यवस्था विफल हो जाती और अन्य साधनों से किसी भी इन्सान की ज़िन्दगी कभी भी वापिस नहीं लाई जा सकती।

यदि हम इस महामारी के परिणाम को देखें तो सूक्ष्म से सूक्ष्म स्तर से लेकर बड़े से बड़े स्तर पर देखे जा सकते हैं। वैश्विक महामारी कोई भी हो उसके परिणाम हमेशा जन जीवन के अनुरूप न कभी थे और न कभी रहेंगे, इसके लिए मानवी समाज को हमेशा तैयार रहना पड़ेगा तथा उपलब्ध संसाधनों से हमें ऐसे कई संकटों से बचना होगा। हर व्यवस्था अपने आपमें एक स्वतंत्र तथा श्रेष्ठ व्यवस्था होती है, किन्तु कई मर्यादाओं के कारण उन्हें अपनी सीमाओं में रहकर कार्य करना अनिवार्य होता है। इस संज्ञान को हमें हमेशा समझना पड़ेगा।

संकट चाहे छोटा हो या बड़ा हो, उसे जीतने का सूत्र हमारे पास होता जरूर है। इसीलिए किसी भी महामारी से बचने के लिए हमें सदा सर्वदा व्यवस्था का साथ देना चाहिए तथा एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। यदि हम एक सूत्रबद्ध जीवन को अपनायें तो किसी भी वैश्विक महामारी में इतनी ताकत नहीं है कि वह हमारी सामाजिक व्यवस्था को कमजोर बना कर रख दे। किन्तु, हमारा समाज इन चीजों को अत्यंत सहजता से लेता है, जिसके परिणाम कई निरपराध जनमानस को भुगतने पड़ते हैं। संक्षेप में, यदि हम किसी भी वैश्विक महामारी को देखें तो उसके तीन महत्त्वपूर्ण प्रभाव हमें दिखते हैं- (१) व्यक्तिगत स्तर पर (२) सामाजिक स्तर पर तथा (३) प्राकृतिक स्तर पर।

व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को हर एक इकाई से देख सकते हैं, जिसमें कई घटकों में जीवन जीना मुश्किल होता है और नित्य जीवन को कई मर्यादाओं में जीना पड़ता है। जैसे स्कूलों का बंद रहना, उद्योगों का न चलना, सेवाएं प्रतिबंधित होना जैसे कई परिणामों से व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों को बहुत बड़ी हानि का सामना करना पड़ता है।

इसके विपरीत प्राकृतिक स्तर पर इसका सकारात्मक परिणाम देखा जाता है, जैसे नदियों का बहाव स्वच्छ होना, स्वच्छ हवा का बहना तथा नैसर्गिक सम्पदा व वन्य जीवों में वृद्धि जैसे कई अच्छे परिणाम भी देखने को मिलते हैं, जिसका सम्बन्ध इन्सान के अति उपभोग की वृत्ति से जोड़ा जाता है। आज की वैश्विक महामारी को देखें तो इसने इन्सान को बहुत बड़ा अनुभव दिया, जिसमें इन्सान को अपनी सीमाओं को समझना और वही सीमाएं हमें हमेशा याद रखना अनिवार्य है।

हमें हमेशा ध्यान रखना होगा कि कोई भी वैश्विक महामारी हमें कुछ बुरे परिणाम जरूर देती है किन्तु कुछ अच्छा भी होना व्यवस्था तथा प्रकृति का नियम है। परिणाम जो चाहे रहे, यह इन्सान चाहे तो किसी भी संकट का सामना डटकर कर सकता है, जिसमें हमें व्यवस्था के साथ चलना चाहिए एवं संघर्ष को संघर्ष से जीतना चाहिए। अंत में...

सब समस्याओं का समाधान है,
सारे ही सद्‌गुणों का सम्मान है।
कोई कसौटी की जरूरत नहीं
यदि सही-गलत की पहचान है।

**श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे**
**(प्रथम पुरस्कार विजेता)**

**श्रीमती माला ठाकुर** – कवयित्री श्रीमती माला ठाकुर का जन्म भारत के हृदयस्थल मध्य प्रदेश के बालाघाट नगर में हुआ। यह अपनी काव्य रचनाओं एवं नारी शक्ति स्वर के लिए काव्य गोष्ठियों तथा आकाशवाणी बालाघाट में आमंत्रित की जाती रही हैं तथा इनकी कुछ कविताओं का प्रकाशन पत्रिकाओं में होता रहा है। इनका एक पुस्तक काव्य संग्रह "रामचरित अंजुरी" नाम से प्रकाशित हो चुका है। इनकी "एक माँ की प्रतीक्षा" नामक कविता अप्रकाशित रचना है।

## एक माँ की प्रतीक्षा

समय सरपट भाग रहा था
धड़कनों में अरमान भरा था
मय आँखों से छलक रहा था
हृदय लालसा जाग उठी थी
प्रीत प्रतीक्षा थाम खड़ी थी
बोया बीज अंकुरा गया था
समय सरपट भाग रहा था

कोमल किसलय सा खिला था
तरुवर शाख लहरा गया था
रजनी से नाता जोड़ रखी थी
नौ माह तक सहेज रखी थी
सारा उपवन महका गया था
समय सरपट भाग रहा था

पहले पहल जब माँ बोला था
हृदय आनंद पीयूष घोला था
चाँद सा मुखड़ा ताक रही थी
सांसों में सरगम बाज रही थी
अम्बर सूरज टांक गया था
समय सरपट भाग रहा था
थाम के उंगली पग बढ़ा था
ममता आँचल क्षीर बहा था
तोतली वाणी मधुमय लगी थी
चंचल अठखेली खूब रूचि थी
सौरभ गीत गुनगुना गया था

समय सरपट भाग रहा था
शनैः शनैः मुखर हुआ था
घर से बाहर पग धरा था
माँ देहरी थाम खड़ी थी
हसरतों की नीड़ बड़ी थी
स्वप्न विमान तेज उड़ा था
समय सरपट भाग रहा था
उड़ने के सोपान तीक्ष्ण थे
ममता के स्नायु सूक्ष्म थे
उसकी चिट्ठी बांच रही थी
चेहरे से रेखा झांक रही थी
चातक अम्बर ताक गया था
समय सरपट भाग रहा था

आयी आँधी तूफान बड़ा था
उजड़ा आँगन ठूँठ खड़ा था
ओठों में बंद सिसकी थी
पलकों पे बूंद ठिठकी थी
मेघ मन झकझोर गया था
समय सरपट भाग रहा था
कोमल स्वर शुष्क हुआ था
स्निग्ध हृदय पाषाण हुआ था
मुट्ठी में कसी चिट्ठी थी
पांव में चिपकी मिट्टी थी
तट नीरव निहार रहा था
समय सरपट भाग रहा था।

**श्रीमती मीना कुमारी** – श्रीमती मीना कुमारी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी के उत्तरी परिसर में शिशु सदन की केयर टेकर हैं। इन्हें कविताएं लिखने में रूचि है। इन्हें विशेष रूप से सामाजिक मुद्दों पर लिखना अच्छा लगता है। इनकी स्वरचित "नशा" नामक कविता अप्रकाशित है। इस कविता पर इन्हें हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार मिला है।

**नशा**

पल भर का मजा-२
ज़िन्दगी भर की सजा।
नशे से जो तो तेरा प्यार बढ़ रहा है
याद रख तू धीरे-धीरे मर रहा है
बढ़ता हुआ शौक न तेरा पीछा छोड़ेगा
पड़ेगी मुश्किलें, तो उल्टे पाँव तू दौड़ेगा।
बिमारियों से हर दम तू घिरा रहेगा
मनोबल हमेशा तेरा गिरा रहेगा
सोचने की शक्ति क्षीण हो जाएगी
चेहरे की रौनक विलीन हो जाएगी
देश का युवा वर्ग होता रहा ऐसा ही नशे का आदी
तो निश्चित ही है युवा और विकासशील देश की बर्बादी।
नशे की लत जो जारी है
यह बहुत अत्याचारी है
मेले लगते हैं शमशानों में
आज इसकी तो कल उसकी बारी है।
यह है पल भर का मजा
इसे उपयोग करके भुगतों के उम्र भर की सजा
टूटने लगे हौंसला तो याद रखना
बिना मेहनत के तख्तों ताज नहीं मिलते
ढूंढ लेते हैं अंधेरे में मंजिल अपनी-अपनी
जुगनू कभी रोशनी के मोहताज नहीं होते।
यह है पल भर का मजा
ज़िन्दगी भर की सजा।

**श्री नितिन त्रिपाठी** – श्री नितिन त्रिपाठी, सुपुत्र, श्री वासुदेव शास्त्री का जन्म सन् १९८७ को शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ है। इन्होंने परास्नातक की शिक्षा कम्प्यूटर साईंस, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से की है। यह वर्तमान में टी.सी.एस. में डेटा साईंटिस्ट के पद पर कार्यरत हैं। बचपन से ही इनकी रूचि पुस्तकों को पढ़ने और कवितायें लिखने में थी। इन्होंने "मनहुस मौत की परछाई" नामक कविता हमारे देश के शहीद क्रांतिकारी अशफाक उल्लाह खान की फांसी की एक रात पहले की स्थिति की कल्पना करके लिखी है।

## मनहूस मौत की परछाई

मनहूस मौत की परछाई,
हर तरफ बिखरती जाती थी,
फांसी घर की स्याहरात,
खामोश गुजरती जाती थी,
सोई थी फैज़ाबाद जेल,
चादर ओढ़े अंधियारों की,
खामोशी भी पथरीली थी,
उन पथरीली दीवारों की।

सुनो दालानों के भीतर,
भटक रही थी खामोशी,
बेरहम सींखचों के ऊपर सर पटक रही थी खामोशी,
सहमी-सहमी सी सर्द हवा,
थी कैद घुटन की आहों में,
और बेहोश पड़े थे गलियारे,
ठण्डी सिहरन की बाँहों में।

झूठी सच्ची हर आहट की,
उम्मीद मिटते जाते थे,
दहशत के बोसल सन्नाटे,
पल-पल गहराते जाते थे।

मरघट की सगी बहन जैसी,
वो एक अनोखी बस्ती थी,

और वो बस्ती उनकी थी,
जिनकी पल दो पल की हस्ती थी।

अनगिनत काल कोठरियों की,
फैली थी लम्बी सी कतार,
और करती थी जहाँ कैदियों की,
बेबसी मौत का इंतजार।

ऐसी ही कोठरी में
कैदी था कोई नौजवान,
एक सरफोश, एक देशभक्त,
एक हिन्दुस्तानी मुसलमान।

**प्रो. रवीन्द्र अरोड़ा** – प्रो. रवीन्द्र अरोड़ा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से सेवानिवृत्त हैं। इन्होंने विद्युत अभियांत्रिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। आजकल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश में अभ्यागत प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। इनका लेख "बिजली महादेव" स्वरचित और अप्रकाशित है।

## बिजली महादेव

कुल्लू की घाटी से करीबन २००० फीट ऊपर, शहर से १४ कि.मी. दूरी पर एक प्राचीन शिव मन्दिर स्थित है जो **"बिजली महादेव"** के नाम से जाना जाता है। यह हिमाचल प्रदेश का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। करीबन १५०० फीट पैदल चढ़ने के बावजूद यहाँ प्रतिदिन अनेकों पर्यटक पहुंचते हैं।

इस मन्दिर की खास बात यह है कि यहाँ हर कुछ वर्षों के पश्चात् आकाशीय बिजली गिरती है और हर बार शिवलिंग के टुकड़े-टुकड़े कर जाती है। पुजारी गण उन टुकड़ों को इकट्ठा कर, उन्हें सत्तू और मक्खन के मिश्रण से जोड़ देते हैं। इस हादसे को एक अच्छा शगुन माना जाता है। प्राचीन विश्वास/प्रथा के अनुसार आकाशीय बिजली को अस्त्र बनाकर भगवान महादेव ने एक दानव, जो आम मनुष्यों पर अत्याचार करता था, को मारने के लिए वहाँ की नदियों, ब्यास और पार्वती का बहाव रोक दिया था।

कुल्लू की घाटी में ब्यास और पार्वती नदियों का संगम है। ठीक उसी जगह करीब २००० फीट ऊपर एक पहाड़ी की चोटी पर यह मन्दिर स्थित है। इस चोटी पर पेड़ों का जंगल नहीं उगता है। केवल छोटी हरी घास ही है। बिजली गिरने से विस्फोट का सिलसिला सदियों से चला आ रहा है। अनेकों देशी और विदेशी वैज्ञानिकों ने शिवलिंग के टुकड़े होने के हादसे का विश्लेषण करने की कोशिशें कीं, परन्तु नाकाम रहे।

सन् २०१७ में प्रोफेसर भरत और मैं वहाँ गये, तो शिवलिंग के टुकड़े होने का कारण समझ में आया। खास मन्दिर घर और आस-पास के छोटे-छोटे घर सब सिर्फ पत्थर और लकड़ी के लट्ठों से बने हैं, जैसा कि पूरे हिमाचल में होता आया है। यहाँ तक कि दोनों तरफ की तिरछी छत्तें भी पत्थर की हैं। जहाँ दोनों तरफ की तिरछी छत्तें मिलती हैं, सिर्फ वहाँ लोहे की टीन से ढका है, ताकि बरसात/बर्फ का पानी मन्दिर के अन्दर न पहुंचे। मन्दिर के बाहर एक ६० फीट का खम्भा है जो चाँदी की तरह चमकता जरूर है, परन्तु लकड़ी का ही है।

आकाशीय बिजली धरती पर हर धातु की तरफ आकर्षित होती है, खास तौर पर नोकीले आकार के धातुओं पर, क्योंकि धातु पर हवा में विद्युत क्षेत्र की तीव्रता बढ़ जाती है। अगर कोई धातु आसपास न मिले तो आकाशीय विद्युत क्षेत्र जमीन पर भी प्रेरित होता है। इसी वजह से पहाड़ की चोटी पर स्थित इस मन्दिर की छत के अकेले छोटे से टीन के टुकड़े पर हर बार बिजली गिरती है, जो कि जमीन से ऊपर है और किसी भी तरह से जमीन से जुड़ा नहीं है।

किलो एम्पियर मात्रा वाले आकाशीय आवेश को धरती के अन्दर जाना पसन्द है, मगर यहाँ उसे कोई भी प्रवाहकीय रास्ता नहीं मिलता है। किसी भी सतह का प्रतिरोध हमेशा मात्रा के प्रतिरोध से कम होता है। इसीलिए यह आवेश मन्दिर की दीवारों की सतह और फर्श पर ही दौड़ने लगता है। वह किसी भी धातु, यानी कम प्रतिरोध पथ की तरफ आकर्षित होता है।

यह आवेश शिवलिंग के बगल में रक्खे दिये जलाने के पीतल के स्टैण्ड और लोटे की तरफ फुरती से पहुंच जाता है। परन्तु वहाँ से जाये तो जाये कहाँ? बस यह आवेश हवा पर अटैक/इंजेक्ट करता है। आवेश एक ऊर्जा है, जो हवा को एकाएक विस्तार देता है। यानी के एक विस्फोट का कारण बन जाता है।

शिवलिंग के बिल्कुल करीब आरती का पीतल वाला दिया ही विस्फोट का केन्द्र बन जाता है। कच्चे पत्थर की बनी बेचारी शिवलिंग के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

**बिजली महादेव मन्दिर में विद्यमान शिवलिंग**

बिजली महादेव मन्दिर का बाहरी दृश्य (६० फीट का लकड़ी का खम्भा बायें तथा प्रवेश द्वार दायें)

बिजली महादेव मन्दिर में प्रो. रवीन्द्र अरोड़ा

**श्री रोहित भामु** – श्री रोहित भामु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश में बी.टैक. के छात्र हैं। इनकी कविताओं (घूँघट, नारी) में भारतीय नारी के प्रति संवेदना और उसके चरित्र का समर्पित भाव झलकता है।

## घूँघट

सुनो, एक बात बताओ
मैं घूँघट में सुन्दर लगती भी हूँ
या सिर्फ मेरे कपड़ों की तारीफ होती है
कभी सोचा है? मुझे इसमें से दिखता भी है
या सिर्फ मेरे तुक्कों की परख होती है
ज़िन्दगी सफर होती होगी तुम्हारे लिए, मेरे लिये तो बस मेरे सहने की शक्ति की परख होती है
इससे रखवाली मेरे रूप की होती भी है
या चिन्ता मर्दों को सिर्फ उनकी ठरक की होती हैं।
मर्द तो अपने सपने पूरे कर लेते हैं
असली परीक्षा तो मेरे सपनों की होती है
बात बड़ों के आदर की होती है
या तुम्हारी सीमित सोच के ऊपर चादर की होती है
मेक-अप का तो बस मिसयूज़ होता है हमारे चेहरे पे
असली चादर तो तुम्हारे दिए हुए इस बोझ की होती है
नियत खराब तो तुम्हारी होती है
और इसे सह रही हम होती हैं
तुम्हारा तो पता नहीं इसमें फायदा कुछ होता भी है या नहीं,
पर मुझे तो इसमें घुटन सी होती है
अच्छा सुनो,
सच सच बताना....
ऐसे ही बड़ी-बड़ी बातें करते हो,
क्या सच में हमसे नजरें मिलाने की हिम्मत भी होती है?

## नारी

वही किलकारियाँ गाती हूँ मैं
वहीं नन्हीं सी मुस्कान साथ में लाती हूँ मैं, फिर भी

पैदा होने की खुशी क्यों नहीं दे पाती हूँ मैं,
हर हफ्ते मेडल लाती हूँ मैं
क्लास में अव्वल आती हूँ मैं, फिर भी
लड़कों के साथ क्यूँ नहीं खेल पाती हूँ मैं?
मोटर गाड़ी सब चलाती हूँ मैं
बातों में टक्कर दे जाती हूँ मैं, फिर भी
क्यूँ नहीं उड़ पाती हूँ मैं
सही राह पर चलना सिखाती हूँ मैं
तुम सबकी ज़िन्दगी भी चलाती हूँ मैं, फिर भी
अच्छी ड्राइवर क्यूँ नहीं कहलाती हूँ मैं
हर रंगमंच पर अपना हुनर दिखाती हूँ मैं
नाच हो या गाना सब कुछ करके दिखाती हूँ मैं, फिर भी खिलौना ही क्यों कहलाती हूँ मैं
अपना घर छोड़कर आती हूँ मैं, सबको ही अपनाती हूँ मैं, फिर भी
घर में क्यों ही कैद हो जाती हूँ मैं,
सफेद चादर का इम्तेहान भी दे जाती हूँ मैं
घूँघट भी लगाती हूँ मैं, फिर भी
शक की नज़रों से क्यों देखी जाती हूँ मैं?
पायल-चूड़ियाँ भी खनकाती हूँ मैं
बिंदिया-लाली भी लगाती हूँ मैं
फिर भी अपनी मर्जी से नौकरी क्यों नहीं कर पाती हूँ मैं

पेट भरकर खिलाती हूँ मैं
तुमको बाप भी बनाती हूँ मैं, फिर भी
वह इज्जत क्यों नहीं पाती हूँ मैं?
खुद पर अपना हक जताती हूँ मैं?
पर तुम्हें खुश करने के लिए चुप हो जाती हूँ मैं
फिर भी तुम्हारी बंदिशें क्यों नहीं तोड़ पाती हूँ मैं
बूढ़ी भी हो जाती हूँ मैं
मिट्टी में मिल जाती हूँ मैं, पर हर बार
सिर्फ नारी दिवस पर ही क्यों याद की जाती हूँ मैं।

# वैश्विक महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

**भूमिकाः-**

वैश्विक महामारी से हमारा अभिप्राय ऐसी बीमारी से है, जो विश्व स्तर पर मनुष्य जीवन को प्रभावित करती है, जिससे मनुष्य के साथ-साथ जीव जन्तु, पेड़-पौधे आदि सभी पर सामान्य प्रभाव पड़ता है। यह न केवल मनुष्य के जीवन को प्रभावित करती है, अपितु अर्थ व्यवस्था को भी हिला कर रख देती है।

**महामारी का अर्थः-**

महामारी से अभिप्राय ऐसी बीमारी जो विशाल मात्रा पर जन जीवन में प्रभाव डालती है। यह कई प्रकार की हो सकती है, जिससे मानव, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, पर्यावरण, वायुमण्डल सभी पर विशाल रूप से प्रभाव पड़ता है। यह एक देश-गाँव-क्षेत्र तक सीमित न होकर पूरे विश्व में दिन-प्रतिदिन बढ़ने का प्रयत्न करती है और धीरे-धीरे विश्व भी इसके संक्रमण में आता-जाता है।

**महामारी का लक्षणः-**

महामारी के कई प्रकार के लक्षण देखे जा सकते हैं यह किसी भी रूप में देखी जा सकती है जैसे हैजा, प्लेग, पोलियो, चर्म रोग, एड्स, कैंसर, टी.बी., कोरोना वायरस, अनन्त कई प्रकार की बीमारी जो धीरे-धीरे महामारी का रूप धारण कर सकती है। यह एक से दूसरे के संक्रमण से भी हो सकती है या बीमारी के इलाज के पर्याप्त साधन, दवाईंयों की सुविधा उपलब्ध न होने पर भी हो सकती है। इसी तरह यह लक्षण धीरे-धीरे एक गाँव से बढ़कर क्षेत्र-ज़िला, प्रदेश-देश-विदेश तक फैल कर भयंकर रूप ले सकती है।

**महामारी का प्रभावः-**

प्रभाव का अर्थ है कि किस प्रकार से वस्तु/व्यक्ति एक दूसरे को या उसके जीवन में बदलाव ला सकता है, जिस प्रकार एक मच्छर के काटने से मलेरिया हो जाता है तथा समय पर उपचार या स्वास्थ्य सुविधा न मिलने पर यह बीमार या मृत घोषित भी किया जा सकता है। इसी प्रकार महामारी का प्रभाव विशाल रूप लेने में एक दिन, एक सप्ताह, एक माह, एक वर्ष, एक सैकिण्ड लेने में समय नहीं लगाता है। जिस प्रकार भोपाल गैस त्रासदी में एक कारखाने में गैस के रिसाव मात्र से कई लोगों, बच्चों की जान चली गई थी तथा देखते ही देखते इस महामारी ने उस क्षेत्र का काफी नुकसान कर दिया।

**उदाहरणः-** कोरोना वायरस जो आजकल वैश्विक महामारी का रूप ले चुका है, जिसने केवल एक छोटे से क्षेत्र जो कि चीन के बुहान से शुरू होकर न केवल चीन, बल्कि ७० देशों-विदेशों को काफी मात्रा में प्रभावित किया। इसका प्रभाव इतना अधिक व्यापक था कि न केवल बुहान, बल्कि चीन-अमेरिका, जापान, इटली, भारत आदि काफी देशों में यह दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। यह इतना अधिक वैश्विक स्तर पर हो गया है कि अब इसकी रोकथाम के लिए प्रतिदिन काफी मात्रा में प्रयोगशालाओं में प्रयोग किए जा रहे हैं जो अब दिन प्रतिदिन सौ(१००)/प्रति व्यक्ति तक है।

**कोरोना महामारी के लक्षणः-**

कोरोना महामारी के लक्षण शुरू में केवल सर्दी-जुखाम तक सीमित थे। धीरे-धीरे विशेषज्ञ द्वारा जब इस बीमारी के बारे में जाना गया तो पाया गया कि यह सर्दी, जुखाम, बुखार, शरीर में दर्द, सांस न आना, खाने में स्वाद का आभास न होना, चक्कर आना, उल्टी आना, दो या तीन दिन तक बुखार का अधिक से अधिक तापमान रहना यह सभी लक्षण कोरोना बीमारी से ग्रसित व्यक्ति में देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार के लक्षण न केवल बच्चों, बूढ़ों, जवान व्यक्तियों, पशु पक्षियों में धीरे-धीरे दिखने लग जाते हैं। अगर इन लक्षणों को समय से पहचाना न जा सके तो यह संक्रमण धीरे-धीरे बढ़ने का स्वरूप ले लेता है, जो देशीय न कहलाकर वैश्विक स्तर कहलाया जाता है। इसी लक्षण से पूरे परिवार के व्यक्ति संक्रमित न होकर उस स्थान को भी प्रभावित करते हैं तथा स्थान के साथ-साथ ज़िला, देश, विदेश को प्रभावित करते हैं।

**कोरोना महामारी की रोकथामः-**

कोरोना महामारी जो अब तक भयंकर रूप ले चुकी है, को न केवल एक दवा अपितु एक जानकारी बनाकर, लोगों को इसके बारे में अवगत करवाकर रोका जा सकता है। क्योंकि अभी तक इस  महामारी की कोई भी दवा तैयार नहीं की गई है और अगर दवा तैयार न हुई तो हमें दिन प्रतिदिन काफी मात्रा में इसका प्रभाव देखने को मिलेगा। इसका केवल एक ही उपाय है कि हम इस महामारी से लोगों को अवगत करवायें। बच्चों, बूढ़ों को इसके लक्षण, प्रभाव, रोकथाम के बारे में जानकारी दें। क्योंकि किसी के द्वारा सही कहा गया है "इलाज से परहेज बेहतर है।" अगर इस महामारी को हम एक इलाज तक सीमित न रख कर इसके परहेज का विशेष ध्यान रखेंगे, तो यह महामारी से बीमारी तथा बीमारी से साधारण रोग तक सीमित की जा सकती है। लोगों को जगह-जगह टेलिविजन, पोस्टर, नाटक कला, अखबार, फोन आदि काफी माध्यमों से इस महामारी की रोकथाम के बारे में जागरूक करवाया जा सकता है।

**जागरूकताः-**

किसी भी महामारी का वैश्विक स्तर पर फैलने का महत्त्वपूर्ण कारण एक मात्र उस जगह के व्यक्ति का जागरूक न होना कहा जा सकता है चाहे वह व्यक्ति, देश की आबादी को उसकी सरकार द्वारा जागरूक करना या न करना दोनों हो सकता है। जागरूकता से आप किसी भी महामारी को उसे वैश्विक स्तर पर रोकने में १०० प्रतिशत साथ देकर उसे १०० प्रतिशत से ८० प्रतिशत कम कर सकते हैं। जिससे न केवल उसके देश की अर्थ व्यवस्था को प्रभाव पड़ेगा, अपितु अशिक्षित वर्ग को एकमात्र जागरूक करके उसे बीमारी के लक्षण प्रभाव के बारे में अवगत करके उसे (महामारी) रोका जा सकता है। एक व्यक्ति अगर एक सही सन्देश अपने आसपास के व्यक्ति तक पहुंचाएगा जो उसी क्षेत्र की रक्षा में काम आये, वही एक जागरूकता अभियान कहलाएगा।

**महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभावः-**

महामारी का सामाजिक जीवन पर काफी व्यापक प्रभाव पड़ता है। यह गरीब, बूढ़े, असहाय जीव-जन्तु सभी पर समान प्रभाव करती है। सामाजिक का अर्थ ही समाज को प्रभाव करना है। समाज में रहने वाली हर एक वस्तु/व्यक्ति/स्थान/वातावरण सभी को प्रभावित करती है। इसके प्रभाव से न केवल असंख्य भयानक उदाहरण उभर कर आते हैं जो सामाजिक अर्थव्यवस्था को तथा उसी नींव को

हिलाने में काफी सही बूरे साबित होते हैं। आजकल सभी देशों की अर्थव्यवस्था का उच्च तथा निम्न जाना उसके समाज पर ही प्रभाव करता है।

**निष्कर्षः-**

वैश्विक महामारी का प्रभाव सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक आदि सभी पर समान पड़ता है। इसे न केवल एक दवा तक सीमित रखकर अगर जागरूकता अभियान मान कर चलें तो यह महामारी से एक साधारण रोग लेने में एक वर्ष से एक दिन तक परिवर्तित की जा सकती है। अतः इसी महामारी को वैश्विक से किसी क्षेत्र तक या एक व्यक्ति तक सीमित करने में उस बीमारी की जागरूकता, लक्षण, प्रभाव, रोकथाम पर ध्यान दिया जाये तो यह महामारी खत्म होने में केवल कुछ क्षण ही लगाती है। अंत में यही कहावत कही जा सकती है "इलाज से परहेज बेहतर"।

**सुश्री सुरूचि**
**(द्वितीय पुरस्कार विजेता)**

**डॉ. स्वाति शर्मा** – डॉ. स्वाति शर्मा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी की अभियांत्रिकी शाखा में सहायक प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। कार्बन पदार्थ एवं विनिर्माण इनका मूल कार्यक्षेत्र है। इन्होंने सदैव हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की है। इनका "भाषा और लिपि" नामक निबन्ध एक अप्रकाशित रचना है।

## भाषा और लिपि

भाषा वह है जिसमें बोला जाता है और लिपि वह जिसमें लिखा जाता है। मनुष्य स्वाभाविक रूप से जब किसी शब्द को सुनता है किन्तु समझता नहीं है, तो उसका ध्यान शब्द में प्रयुक्त ध्वनियों पर चला जाता है। शब्दों को हमारा मस्तिष्क छोटी-छोटी ध्वनियों में तोड़ लेता है, जिन्हें फिर हम अक्षरों के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रक्रिया को लेखन कहते हैं और अक्षरों या चिह्नों की पूर्व-निर्धारित व्यवस्था को लिपि।

मुझे इस विषय पर अनायास ही कुछ लिखने की आवश्यकता महसूस हुई जब मुझसे किसी ने अपना नाम अंग्रेजी में लिखने के लिए कहा। अंग्रेजी कोई लिपि नहीं है। यह एक भाषा है, जिसमें रोमन लिपि का प्रयोग होता है। रोमन यूरोप की अधिकांश भाषाओं की लिपि है, जैसे कि जर्मन, फ्रेंच, इतालव, पुर्तगाली, इत्यादि। यदि मैं कहूँ कि मैं अपना नाम जर्मन में लिखूँगी तो क्या वह अंग्रेजी से भिन्न होगा? दुर्भाग्य की बात है कि इस समय हमारे देश में भाषा और लिपि के अंतर लोग भूलते जा रहे हैं। अच्छे-भले पढ़े लिखे लोग, यहाँ तक कि पत्रकार, समाचार प्रस्तुत कर्त्ता और साहित्यकार तक अंग्रेजी भाषा के शब्दों को भारतीय लिपियों में लिखकर उसे भारतीय भाषा की संज्ञा दे देते हैं। इस विषय पर मैं यहाँ अपना स्वाध्याय-जनित मत प्रस्तुत कर रही हूँ।

भारत में चार सौ से अधिक भाषाएँ व बोलियाँ बोली जाती हैं, जिनमें से बाईस को संविधान में राजकीय भाषाओं का दर्जा प्राप्त है। सभी राजकीय भाषाओं के साथ कोई न कोई लिपि सन्निहित है। कुछ लिपियाँ एक से अधिक भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं, जबकि कुछ मात्र एक भाषा में। कुछ लिपियों का नाम वही होता है जो भाषा का। जैसे बांग्ला भाषा-बांग्ला लिपि या तेलुगू भाषा-तेलुगू लिपि। पर भाषा से भिन्न नाम रखने वाली लिपियाँ भी कम नहीं हैं। जैसे हिन्दी-देवनागरी, पंजाबी-गुरूमुखी, उर्दू-अरबी, इत्यादि। कोई दो-तीन सौ साल पहले भारत में हिन्दी-उर्दू एक ही भाषा का नाम था। बाद में राजनैतिक परिस्थितियों और देश में पनपती विभाजनकारी बुद्धियों ने एक से दो भाषाएँ बना डालीं। रोचक तथ्य यह है कि दोनों भाषाओं में कोई विशेष अंतर नहीं है, पर जो लोग उसे हिन्दी कहते हैं वे देवनागरी में लिखते हैं और जो उर्दू कहते हैं वे अरबी में। कोई कहता है कि हिन्दी में उर्दू के शब्द हैं और कोई कहता है कि उर्दू में हिन्दी के। जब भाषाओं का उद्गम एक है तो समानता होना स्वाभाविक ही है। हाँ, लिपियाँ समान उद्गम नहीं रखतीं। देवनागरी लिपि का मराठी, नेपाली और संस्कृत में भी उपयोग होता है, जबकि अरबी का कुर्दिश, पश्तो और विभिन्न अरबी भाषाओं में।

अब क्या कारण है कि किसी भाषा का नाम उसकी लिपि के नाम से अलग हो? होता यह है कि लिपि की तुलना में भाषाओं का रूप बहुत जल्दी बदलता है। आज की हिन्दी, तमिल या गुजराती आज से दो सौ साल पहले बोले जाने वाले अपने रूप से बहुत भिन्न हैं, पर लिपियों में अधिक या बिल्कुल भी परिवर्तन नहीं आया है। बहुधा नई विकसित हुईं भाषाएँ पहले से उपलब्ध लिपियों का या तो सीधे ही उपयोग कर लेती हैं अथवा थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ। ऐसे परिवर्तन कुछ अक्षरों के उच्चारण में देखने को मिल जाते हैं। जैसे रोमन लिपि के अक्षर "श्र" को अंग्रेजी में "ज", जर्मन और डच में "य" और फ्रेंच में "ज़" पढ़ा जाता है। इसमें सही या गलत कुछ नहीं है, इसका कारण यह है कि इनमें से किसी भी भाषा का विकास रोमन लिपि के साथ नहीं हुआ है। इन्होंने बाद में अपना साहित्य रोमन में लिखना प्रारम्भ कर दिया, और भाषा की सुविधा के अनुसार वर्णमाला तथा उच्चारण का चयन किया। "ज" और "य" अंतर भारतीय भाषाओं में भी मिलता है, जैसे योगी और जोगी, देवयानी और देबजानी में। जब उच्चारण का अंतर इतना हो कि लिपि को समूल बदल दिया जाये, तो नई लिपि जो एक भाषा-विशेष के लिए ही विकसित हुई है, उसी भाषा के सन्दर्भ में जानी जाती है।

अब प्रश्न यह है कि क्या कोई व्यक्ति अपना नाम किसी अन्य भाषा में लिख सकता है? नहीं, नाम एक मूल संज्ञा है जिसकी मात्र लिपि बदली जा सकती है भाषा नहीं। मूल संज्ञाओं का अनुवाद नहीं किया जाता। तो यदि किसी बच्चे से उसकी शाला में अंग्रेजी या हिन्दी में लिखने के लिए कहा जाता है, तो आप उस बच्चे को भाषा एवं लिपि का अंतर अवश्य समझा दीजिये। और हो सके तो भाषाओं के विषय पर झगड़ा करने और अपनी भाषा को अन्य भारतीय भाषाओं से बेहतर सिद्ध करने की अपेक्षा पहले सभी भाषाओं और लिपियों को तकनीकी रूप से समझने का प्रयास कीजिये। हमारा देश भाषा और लिपि दोनों ही क्षेत्रों में विश्व के सबसे अमीर देशों में से एक है। आपसी प्रतियोगिता के चलते हम कहीं अपनी इस श्रेष्ठता को आहत न कर बैठें।

**श्री तुलसीराम** – श्री तुलसीराम का जन्म दिनांक ३१ अक्तूबर, १९८२ को हुआ। इन्होंने अपनी शिक्षा हिन्दी माध्यम से की है। कविता लिखना इनकी रूचि है और इन्होंने अनेक कविताएं लिखी हैं। उनमें कहीं नारी संवेदनशीलता का भाव झलकता है, तो कहीं पर राष्ट्रीयता का स्वर मुखर है। यह आजकल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, हिमाचल प्रदेश में सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत हैं। निम्नलिखित कविता पर इन्हें हिन्दी पखवाड़े के दौरान प्रथम पुरस्कार मिला है।

## दहेज प्रथा और बेटी

बिन दहेज बेटी ब्याह पाएंगे कैसे?
बिन पैसे खुशियां ला पाएंगे कैसे?
जो रोजी-रोटी जुटा पाते मुश्किल से,
वो दहेज जुटा पाएंगे कैसे?

टूट जाती हैं शादियां, लौट जाती बारातें
लाचारी में उनकी मरहम लगा पाएंगे कैसे?
सजेगी कैसे उनकी डोली,
बात यह समाज को समझा पाएंगे कैसे?
दहेज के लालची जला रहे बहुओं को,
इन बेरहमों से बेटी बचा पाएंगे कैसे?
अपनी बेटी को हंसाते, दूसरों की बेटी को रूलाते,
बेटी तो बेटी होती है, बात यह समाज को समझा पाएंगे कैसे?

शोहरत मंद, दौलत मंद, पढ़े-लिखे लिप्त इसमें,
पाठ इन्सानियत का पढ़ा पाएंगे कैसे?
दहेज ले भी रहे हैं, दहेज दे भी रहे हैं,
बढ़ रही है दिन व दिन प्रथा मिटा पाएंगे कैसे?

बढ़ेगा समाज, मिलेगा जब इन्हें सम्मान,
बेटी है अनमोल, मातृभूमि से है इसका तोल।
अधिकार दो इन्हें एक समान,
आर्यवर्त का होगा इन्हीं से रोशन नाम।

देश को उन्नति के पथ पर ले जाना है,
बेटियों को शिक्षित करना है,
बेटी बचाओ और जीवन सजाओ।

बेटी पढ़ाओ और खुशहाली बढ़ाओ,
एक आदर्श माँ-बाप कहलाओ,
एक आदर्श सास-ससुर कहलाओ,
बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ।

**वैभव त्रिपाठी** – भा.प्रौ.सं. मण्डी, हि.प्र. में एम.टैक. (सीएसपी-टी१९१६८) के छात्र श्री वैभव त्रिपाठी, सुपुत्र, श्री बालेंदु त्रिपाठी का जन्म १९९५ को प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) ज़िले में हुआ है। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्रतापगढ़ से ही पूर्ण की है। इनकी लेखन में अभिरूचि काफी पहले से थी। इन्होंने बहुत बार अपने विचारों को अपने लेख के माध्यम से लोगों के बीच अभिव्यक्त किया है, जिसकी काफी सराहना हुई है। इनकी "चाय का नुक्कड़" एक स्वरचित और अप्रकाशित रचना है।

## चाय का नुक्कड़

कभी-कभी नहीं,
अक्सर ही मेरे दिल में ख्याल आता है।
कि शहर के हर चौराहे पर,
हर नुक्कड़ पर
चाय की एक गुमटी,
औरतों के लिए भी होनी चाहिए।
जहाँ खड़ी होकर
कभी अकेले तो कभी अपने दोस्तों के संग,
बीच बाज़ार, भरे चौराहे ठहाके लगा सके,
साझा कर सके अपने बयार।
अपनी घुमक्कड़ी के किस्से,
नौकरी की परेशानियां,
नज़र अंदाज कर दी गई फब्तियां,
देश की इकोनॉमी पर अपने विचार,
वाइरल हुए जोकें और मीम्स,
और वो सब कुछ,
जो उनके मन की चारदीवारी में,
अरबों युगों से जब्त है।
एक धौल में सारी मायूसी लापता हो जाये,
चाय की चुस्कियों की मिठास में गुम हो जाये।
बेटी की इंजीनियरिंग एंट्रेंस की चिंता,
नौकरी पेशा बेटे के लिए,
अपनी जैसी हूबहू बहु लेने का सपना,

बंद हो जाये।

इतनी देर कैसे हो गयी,

इतनी देर कहाँ रह गयी,

घर का कुछ ध्यान है कि नहीं,

जैसे अनगिनत सवालों का गुज़रना,

और सबसे बड़ा सवाल,

आज खाने में क्या पकेगा,

कि इस पकहत से कुछ पल के लिए ही सही, मिल जाये मुक्ति।

औरतें अपनी सारी फिक्र,

सारी परेशानियां,

पास के कूड़े के ढेर में फेंक दें

और मुस्कुराते हुए कहें,

चल यार, कल मिलते हैं,

इसी समय,

अपने चाय के नुक्कड़ पर।

# वैश्विक महामारी का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

**भूमिकाः-**

महामारी मनुष्य जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती है, मुख्यतः यह मनुष्य के जनजीवन पर दुष्प्रभाव डालती है। महामारी मनुष्य को बांध कर रख देती है, जिससे मनुष्य को जीवन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वैश्विक महामारी हमारे जलवायु, जीवों और पर्यावरण पर गहरा आघात कर सकती है। मनुष्य का जीवन जल, वायु, अग्नि और स्वस्थ शरीर के बिना बहुत कठिन है। वैश्विक महामारी हमारी रोजमर्रा के जीवन पर भी प्रभाव डालती है।

**वैश्विक महामारी क्या हैः-**

हाल ही में जैसे कि 'कोरोना कोविड-१९' जो एक वैश्विक महामारी के रूप में उभरी है। कोरोना को सार्स के नाम से भी जाना जाता है। महामारी एक तरह से मनुष्य जीवन में अभिशाप भी माना जा सकता है। एक महामारी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के बीच में फैलती है। इस तरह की महामारी मनुष्य के बीच में मरण दर को बढ़ा देती है। वैश्विक महामारियों में कोरोना, पोलियो, एड्स आदि को भी लिया गया है। इनमें से कुछ महामारियों के इलाज ढूंढ लिए गए हैं और कुछ पर सिर्फ काबू पाया गया है।

**वैश्विक महामारी के प्रभावः-**

१. **आयात-निर्यात में असरः** वैश्विक महामारी देश-दुनिया के बीच में खान-पान की वस्तुओं, मशीनों और व्यापारिक आयात-निर्यात को अंकुश लगा देती है, जिससे किसी भी देश की जी.डी.पी. आदि पर असर पड़ सकता है। इस कारण से कई देशों में भूखमरी आदि की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है तो वैश्विक दृष्टि से मनुष्य जीवन पर प्रभाव डाल सकती है।

२. **अर्थव्यवस्था पर प्रभावः** वैश्विक महामारी विश्व की अर्थव्यवस्था को हिला कर रख सकती है। विभिन्न देशों के एक-दूसरे देशों के साथ सम्बन्ध खराब हो सकते हैं। इससे मल्टी सैक्ट्रल प्रोजेक्टों पर भी असर पड़ सकता है।

३. **मृत्यु दर में वृद्धिः** वैश्विक महामारी से मनुष्यों में मृत्यु दर बढ़ जाती है। जन्म दर से ज्यादा मृत्यु दर बढ़ जाती है, जो संसार से मनुष्य जाति के समाप्त होने का खतरा पैदा कर सकती है।

४. **जीव जन्तुओं और पक्षियों पर प्रभावः** हमारा पर्यावरण एक वर्ग में चलता है, हर जीव जन्तु और पक्षी पर्यावरण में अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो संसार की ज्यादा से ज्यादा गंदगी को साफ करते हैं और पर्यावरण को शुद्ध बनाने में मदद करते हैं। जीव जन्तुओं की अत्यधिक संख्या में मरना भी एक महामारी उत्पन्न कर सकता है जो एक वैश्विक स्तर पर खतरा बन सकता है, जैसे कि उदाहरण के तौर पर स्वाईन फ्लू, बर्ड फ्लू जैसी बिमारियां।

५. **मनुष्य जीवन पर मानसिक असरः** वैश्विक महामारी के कारण मनुष्य जीवन बहुत अस्त-व्यस्त सा हो जाता है, जिससे मनुष्य को अधिकतर समय अकेले में या खुद को इक जगह पर व्यतीत करना पड़ सकता है। यह मनुष्य के मानसिक विकास पर असर डाल सकता है और मनुष्य के मानसिक तनाव की स्थिति बढ़ सकती है, जो परिणामस्वरूप किसी भी तरह से मनुष्य को विकलांग कर सकती है।

**समाज और महामारीः-**

अधिकांश मनुष्य यह नहीं जानते हैं कि महामारी के फैलने का क्या कारण था और यह कैसे फैली। हमारा आज का समाज बहुत ही व्यस्त और भीड़-भाड़ से भरा पड़ा है। मनुष्य खुद को जीवन में ऊपर उठने के लिए कठिन परिश्रम करता है। वैश्विक महामारी मनुष्य के कदमों पर रोक लगा देती है। समाज महामारी को अभिशाप के तौर पर लेता है और उससे बचने के उपाय ढूंढने में लग जाता है। हमारा समाज अलग-अलग संस्कृति और वेशभूषा व विविध भाषीय लोगों से भरा पड़ा है। हर समस्या को हमारा समाज अपने नज़रिये से देखता है। गतिशील देशों के विकास में हमारा समाज बहुरूपी तरह से भूमिका निभाता है।

**वैश्विक महामारियों के नामः-**

- पोलियो
- कोविड-१९
- एड्स
- स्वाईन फ्लू
- बर्ड फ्लू

**विश्व स्वास्थ्य संगठन** (WHO) **और महामारियांः-**

World Health Organization एक वैश्विक संगठन है जो मनुष्य स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न तरह की महामारियों से डील करता है। जैसे कि हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने "COVID-19" को एक वैश्विक महामारी के तौर पर विश्व के सामने रखा। "कोविड-१९" एक वायरस है जो मनुष्य के बीच में फैलता है (हवा के द्वारा और एक दूसरे के साथ मिलने से)।

**निष्कर्षः-**

वैश्विक महामारियों ने मनुष्य और सामाजिक जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। कुछ महामारियों पर मनुष्य ने काबू पा लिया है तथा कुछ महामारियों के इलाज पर अभी काम चल रहा है। समाज ने महामारियों के साथ जीवन व्यतीत करना सीख लिया है। महामारियों ने विश्व के किसी भी देश को अछूता नहीं छोड़ा है। विश्व एक युद्ध स्तर पर इन महामारियों से लड़कर आगे बढ़ रहा है। मनुष्य ने महामारियों से बचाव के लिए अपने जीवन में रख रखाव, पहनावा, खान-पान और जीवन यापन के ढंग को बदल दिया है।

मनुष्य ने एक बेहतर जीवन जीने के लिये अपनी इच्छाओं पर काबू पाना सीख लिया है तथा महामारी और मनुष्य वैश्विक स्तर पर साथ-साथ आगे बढ़ रहे हैं।

**श्री विजय सिंह**
**(तृतीय पुरस्कार विजेता)**

# संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी के राजभाषा प्रकोष्ठ ने संस्थान में दिनांक १४ सितम्बर से २८ सितम्बर, २०२० तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया। इसमें हिन्दी सूक्ति पोस्टर/चित्र, निबन्ध, कविता पाठ, सामान्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताएं करवाई गईं। वर्तमान सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए संगरोध कर्मचारियों को ऑनलाइन विधि से भाग लेने की भी व्यवस्था की गई थी। पखवाड़े के समापन समारोह में प्रतिभागियों द्वारा बनाये गये हिन्दी सूक्ति पोस्टरों/चित्रों की प्रदर्शनी लगवाई गई। इस समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. एस.सी. जैन ने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए। इसका विवरण निम्नलिखित है-

## हिन्दी सूक्ति पोस्टर/चित्र प्रतियोगिता

| क्रम संख्या | नाम | स्थान |
|---|---|---|
| १. | श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे | प्रथम |
| २. | श्रीमती स्तुति शर्मा | द्वितीय |
| ३. | श्री तरूण वर्मा | तृतीय |
| ४. | श्रीमती मीना कुमारी | सान्त्वना |
| ५. | श्रीमती विनती चन्देल | सान्त्वना |

## हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

| क्रम संख्या | नाम | स्थान |
|---|---|---|
| १. | श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे | प्रथम |
| २. | सुश्री सुरूचि | द्वितीय |
| ३. | श्री विजय सिंह | तृतीय |
| ४. | श्रीमती सीता देवी | सान्त्वना |
| ५. | श्री सोहन लाल | सान्त्वना |

## हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता

| क्रम संख्या | नाम | स्थान |
|---|---|---|
| १. | श्री तुलसीराम | प्रथम |
| २. | श्रीमती मीना कुमारी | द्वितीय |

| | | |
|---|---|---|
| ३. | श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे | तृतीय |
| ४. | श्रीमती नीलम | सान्त्वना |

**हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता**

| **क्रम संख्या** | **नाम** | **स्थान** |
|---|---|---|
| १. | श्रीमती पल्लवी शर्मा | प्रथम |
| २. | श्री तरूण वर्मा | द्वितीय |
| ३. | श्री अनूप कुमार | तृतीय |
| ४. | सुश्री सुरूचि | सान्त्वना |
| ५. | श्री मून्शी राम | सान्त्वना |

इस अंक में हिन्दी निबन्ध और कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले प्रतिभागियों की कविताएं और निबन्ध शामिल किए गए हैं। कुछ छायाचित्र निम्नलिखित हैं:

## संस्थान में आयोजित हिन्दी सूक्ति चित्र प्रदर्शनी

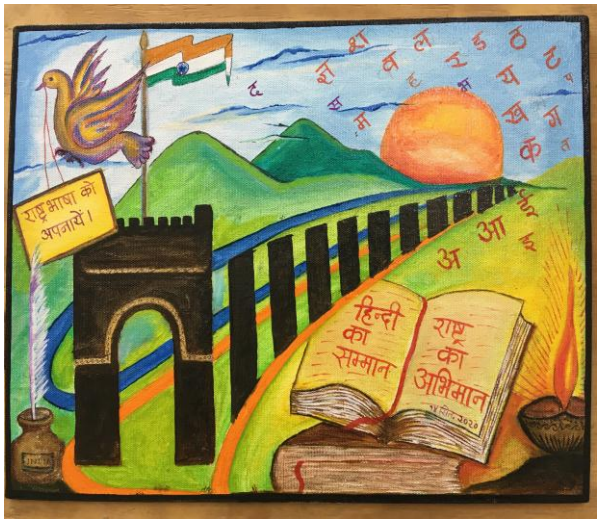


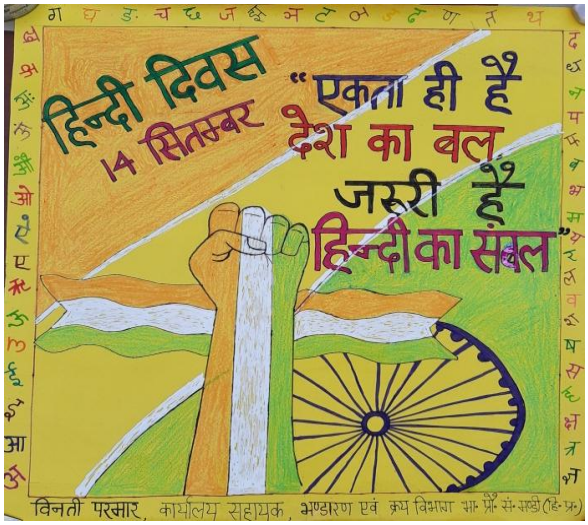

**पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रतिभागी श्री अनूप कुमार (बायें) और मुख्य अतिथि (दायें)**

समापन समारोह में श्री तुलसी राम कविता पाठ करते हुए

श्री ज्ञानेश्वर अशोकराव गुडधे (बायें) और मुख्य अतिथि प्रो. एस.सी. जैन (दायें)

भारतीय
प्रौद्योगिकी
संस्थान
मण्डी

**राजभाषा प्रकोष्ठ**
**भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी**
**ग्राम व डाकखाना–कमान्द, ज़िला मण्डी, हिमाचल प्रदेश–175075**
**दूरभाषः 01905–267097, ई–मेलः hindicell@iitmandi.ac.in**